ग्रुङ्कः कृशनः पात्वंहसः AV. iv. 10. 1; animals etc. पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत ये मृगाः । शकुन्तान्पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः AV. xi. 6. 8; roots used with *aṁhas* (Abl.) and the person (Acc.) *pā-*, *niḥ-pā-*, *pari-pā-* ṚV. i. 18. 5; ṚV. x. 126. 2; ṚV. i. 136. 5; *pṛ-*, *niḥ-pṛ-* ṚV. ii. 33. 3; iii. 32. 14; ṚV. x. 65. 12; *uruṣy-* ṚV. i. 58. 8; ii. 26. 4; ṚV. vii. 1. 15; *rakṣ-* ṚV. vii. 15. 13; x. 36. 2; *niḥ-spṛ-* ṚV. vii. 71. 5; roots used with *aṁhas* (Acc.) and the person (Abl. or Dat.) : *vi-cat-* (caus.) ṚV. ii. 33. 2; *vi-ci-* ṚV. vi. 67. 8; ṚV. iv. 20. 9; *vi-ruj-* ṚV. iv. 3. 14; *pari-yā-* ṚV. vi 37. 4; *ni-pā-* ṚV. iv. 11. 6; *tṛ-*, *ati-tṛ-*, *vi-tṛ-* ṚV. vi. 2. 4; ṚV. i. 42. 1; ṚV. v. 45. 11; *muc-* and *yu-* with *aṁhas* (Abl. or Acc.) and the person (Acc. or Abl.) ṚV. ix. 104. 6; ṚV. viii. 18. 10; ṚV. x. 97. 15; ṚV. iv. 12. 6, cf. TaiS. IV. vii. 15. 7; *aś-* and *naś-* with *aṁhas* (Nom.) and the person (Acc.) in negative ṚV. ii. 23. 4; ṚV. vi. 3. 2; vii. 82. 7; after the ṚV. the most frequently used roots are *pā-* and *muc-* with *aṁhas* (Abl.) and the person (Acc.) ता मा सहस्रपुण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहसः AV. viii. 7. 13; अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व॑ऽहसः TaiS. III. i. 4. 3 = VājaS. 20. 14 = ChāndoUBr. ii. 2. 8; MānS'S. 53. 21; ता नो मुञ्चन्त्वंहसः VājaS. 12. 89; मुञ्चेमम॑ऽहस इत्याह TaiBr. I. vi. 1. 3; पुनर्नः पाह्यंहसः JaimiBr. 3. 71; षण्मोर्वीरंहसस्पान्तु S'atBr. I. v. 1. 22 = S'āṅkhāS'S. i. 6. 4; **B** tribulation, harm, defect, fault उभे चैनं द्यावापृथिवी अंहसस्पातामित्युभे चैनं द्यावापृथिवी आर्त्ति(? र्त्तेः)र्गोपायतामित्येवैतदाह S'atBr. I. ix. 1. 20; अंहो वा एतदव्रजस्य यदतिक्रान्तमुल्बणं सदस्यो बोधयेतेति KauṣīBr. 26. 4; बहिःसहस्रमभ्यस्ता मासमात्रेण साधिनः । त्रायते महतः पापात्सर्वस्मादपि चांहसः AhirbuS. 57. 19; गेयासं गीतैर्वा सुयत्रेण मेयासं स्थेयासं चाम्रेऽवसेयासमंहः (comm. अंहश्शब्दुर्दोषाद्युद्भवं पापं कष्टमित्यर्थः । अवसेयासं लवणाद्युत्तारणेनान्तं नयेयमिति) DvyāśraKā. 9.169. **2** sin बृहि॑द्रं (v. 1. बृहीद्रं)···अनृतमाह पूरुषः । तस्मात्सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः AV. xix. 44. 8; यद्ग्रामे यदरण्ये···यदेनश्चकृमा वयं॒यदप्सश्चकृमा वयम् । ···तस्य सर्वस्यां॑ऽहसोऽवयजनमसि MaiS. i. 10. 2; यद्देवं किंद्वार्वाचीनं जनितोरेनः करोति तत एनम॑ऽहोमुञ्चति MaiS. iv. 3. 9; ऋतेन द्यावापृथिवी ऋतेन त्वं सरस्वति । कृतान्नः पाह्य॑ऽहसो यत्किंचानृतमोदिम MaiS iv. 14. 17 = TaiBr. III. vii. 12. 21; TaiS. VII. v. 22; योऽश्नीयाद्यावकं पक्वं गोमूत्रे सशकृद्रसे । सदधिक्षीरसर्पिष्के मुच्यते सोंऽहसः क्षणात् । प्रसूतो यश्च शूद्रायां येनागम्या च लङ्घिता BaudhDhS. iv. 6. 5; अतिलोभात् प्रमादाद्वा यः करोति क्रियामिमाम् । अन्यस्य सोऽहसाविष्टो गरगीरिव सीदति BaudhDhS. iv. 8. 1; यद्वर्षे मत्स्यवन्धानां··· । अंहः कुक्कुटिकानां च तद्दिने कृषिकारिणाम् BṛParāSm. 5. 145; सैषा त्रयी तपत्यंहो जगतश्च हिनस्ति या ViṣṇuP. ii. 11. 7; अलमेष विलोकितः प्रजानां सहसा संहतिमंहसां विहन्तुम् Kirātā. 5. 17; या (i. e. यमुना) कृष्णापि शुद्धेरधिकं विधातुमिविहन्तुमंहांसि जलैः पटीयसी SiśuVa. 12. 67; (लभते) जीवो दुःखदां गतिमंहसा PadmP. (Ra.) 110. 50; S'ivaKePāSt. 7. 17; RāmC. 21. 61; RāghPān. (Dha.) 4. 11; सर्वस्मात् त्राहि मांहसः SkandP. III. i. 51. 27; III. iii. 2. 70; BhāgP. iv. 13. 22; v. 10. 24; रुद्रः पतिर्हि भूतानां यस्याकरवमंहसम् (*m.* or *n.* ?) BhāgP. iii. 14. 33; भोगादृते न क्षयोऽस्ति प्राक्तनानामिहांहसाम् BrahmP. 150. 6; Rāvaṇā. 9. 26; ĪśānS'iPa. i. 9. 34; VairāS'.(Pa.) 76; धर्मो मर्माविदंहसाम् TriṣaśaPuC. i. 7. 149; (ग्रामः) दत्तः···तथा (अ) व्यलुरिति ख्याताय वीतांहसे EI. iii. 30. 143; अपि यो दायादाय क्षयप्रदोंऽहसि Nalo. 1. 7; HammīMaKā 1. 71; Acyutarā. 8. 3; YātrāPra. 1. 5; VīraMi(Bhakti). 60. 6; ParamāKā. 47. 69; LalitāstaRa. 53; LakṣmīT. 42. 14; श्रीः···क्षपणी च सदांहसाम् LakṣmīT. 50. 160; ĀnandaRa. 2. 45; EkīSt. 2; *aṁhas* is stated in some Kośas as synonym of करसंपुट KośaKaTa. 2. 4194; किट्ट KośaKaTa. 2. 4433; किल्बिष AnekāK. 912; पङ्क S'abdaRa.(Vā.) 3920; रजस् S'abdaRa.(Vā.) 3978; राष्ट्र KośaKaTa. 2. 7780; शमल KośaKaTa. 2. 8720.

**अंहसस्पति** (aṁhasas-patí) *m.* [aluCpd.] lord of distress (name of an intercalary month) उपयामगृहीतोऽस्यंहसस्पतये त्वा VājaS. 7.30; अंहसस्पतये स्वाहा VājaS. 22. 31; अंहसस्पतये त्वेति त्रयोदशं ग्रहं गृह्णाति S'atBr. IV. iii. 1. 20.

**अंहस्पति** (aṁhas-pati) *m.* **A** Name of the month having two transits of the sun अधिमासस्तु निन्द्यः स्यात् संसर्पोंहस्पती तथा BṛhaspaSm. 248. 116; यस्मिन् मासे चैत्रादर्वाङ् न संक्रान्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा भवति तौ संसर्पोंहस्पतिसंज्ञकौ मासौ SmṛtiCan. v. 104. 17; v. 104. 12; v. 116. 14; संक्रान्तिद्वयसंयुक्तः स मासोंऽहस्पतिः स्मृतः CaturCin. iii (2). 35. 14; iii (2). 30. 18; क्षयमासस्य अंहस्पतिसंज्ञत्वं तत्पूर्वोत्तरभाविनोश्चाधिमासयोः संसर्पाधिमाससंज्ञत्वं चोक्तम् VīraMi. (Samaya.) 143. 19; 143. 24; **B** name of an intercalary month अधिमासोंऽहस्पतिः स्यात् KalpaK. 412. 63.

**अंहस्पत्य** (aṁhaspatyá) *m.* **A** name of the month with two transits of the sun सु॑ऽसर्पोऽस्य॑ऽहस्पत्याय त्वा TaiS. I. iv. 14. 1; VI. v. 3. 4; MaiS. iii. 12. 13; संसर्पोऽस्यंहस्पत्याय त्वेति मासनाम्नैककपालमभिजुहोति ĀpaS'S. viii. 20. 8; BhārS'S viii. 24. 7; MānS'S. 81. 19; **B** the lord of distress दिवांपतये स्वाहाऽ॑ऽहस्पत्याय स्वाहा TaiBr. III. x. 7. 1 (Bhaṭṭa Bhāskara अंहसां गतीनां पतिरंहस्पतिः स एव अंहस्पत्यः···। यद्वा अंहस्पतयो वायुमन्तः महाप्राणाः तानर्हतीति अंहस्पत्यः)

**अंहस्वत्** (aṁhas-va(n)t) *adj.* sinful अंहुरोंऽहस्वान् Nir. 6. 27.

**अंहःसंघ** (aṁhaḥ-saṅgha) *m.* a multitude of sins लीलाविचेष्टितं यस्य···। अंहःसंघक्षयकरम् SkandP. ii. (2). 43. 40; हरेः···अङ्घ्रिरंहःसङ्घं निहन्तु वः SaraKaṇṭhā. 232. 3.

***अंहह (अंहहा)** (*aṁhaha) (aṁhahā) *adj.* the slayer of sins or distress (knower of motions) एतद्वां तेन प्रीणानि । तेन तृप्यतम॑ऽहहौ TaiBr. III. vii. 5. 12.

**अंहारि** (aṁhāri) *m.* the enemy of sin अंहारिरसि बम्भारिः KapiKaS. 2. 7.

**अंहिकुटि** (aṁhi-kuṭi) *m.* a sky-lark भरद्वाजः कक्रराटो व्याघ्रटांहिकुटिः परः MadaPāNi. 77. 17.

**अंहिति** (aṁh-iti) *f.* (= ²अंहति *f.*) दानेंऽहतिरंहितिश्च S'abdaRa.(Su.) 3. 31; अंहितिः मध्येकारवती इति तु कलिङ्गादयः Padacandrikā on AmaK. ii. 515. 9; कलिङ्गास्तु अंहतेः क्तिनि ग्रहादित्वादिट्यंहितिशब्दमिच्छन्ति Ujjvaladatta on Uṇā. 4. 62; राजाधिराजविरुदो राजराजसमांहितिः EI. iv. 275. 98.

**अंहीयस्** (aṁh-īyas) *adj.* [*comp.* of अंहु, *f.* -ī] **A** narrower अधिषवणे ।···पुरस्तादंहीयसी भवतः पश्चाद् वरीयसी । एवमेव हि हनू KapiKaS. 40. 2. = KāṭhS. 25. 9; परोवरीयांसो वा इमे लोका अर्वागंहीयांसः AitBr. 4. 8(106); यदिमे लोकास्संक्रामेयुरंहीयाद (? न्) यजमानस्य लोकः स्यात् JaimiBr. 2. 260; पुरस्तादंहीयसी पश्चात्प्रथीयसी मध्ये संनततरा भवति ĀpaS'S. ii. 3. 2 = ĀpaS'uS. ii. 4. 14; यत्र पुरस्तादंहीयसीं मिनुयात् तत्र तदर्धे लक्षणं करोति BaudhS'uS. 1. 41; पुरस्ताद् अंहीयसी भवतः BhāraS'S. xii. 13. 2; **B** nearer, closer तस्मादात्मनः प्रजांहीयसी KāṭhS. 24. 9 = KapiKaS. 38. 2.

**अंहु** (aṁh-ú) *adj.* narrow [only in the compound *aṁhubhédī*]; *n.* narrowness, distress, trouble [associated with its opposite *urú* 'wide, freedom', Abl.sg. in ṚV. only] बृहिर्न यत्सुदासे वृथा वर्गंहो राजन्वरिवः पूरवे कः ṚV. i. 63. 7; आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ṚV. i. 107. 1 = VājaS. 8. 4 (Uvaṭa पापकारी); TaiS. I. iv. 22. 1; अंहोश्चिदस्मा उरुचक्रिरद्भुतः ṚV. ii. 26. 4; मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते ṚV. v. 65. 4; अंहोश्चिदुरुचक्रयः ṚV. v. 67. 4; अस्ति देवा अंहोरुर्वस्ति रत्नमनागसः ṚV. viii. 67. 7; viii. 18. 5; अंहतिश्चांहश्चांहुश्च हन्तेः Nir. 4. 25.

**अंहुभेदी** (aṁhu-bhédī) *f.* having the female organ with a narrow slit यदस्या अंहुभेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत् VājaS. 23. 28 (Uvaṭa अंहुः हन्तव्यः भेदप्रदेशः प्रजननमस्या इति अंहुभेदी) cited in GopBr. ii. 6. 15; S'āṅkhāS'S. xvi. 4. 3.

**अंहुर** (aṁhu-rá) *adj.* **i** distressed, oppressed सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात् ṚV. x. 5. 6 = AV. v. 1. 6; **ii** sinful अंहुरोंऽहस्वान Nir. 6. 27.

**अंहूरण** (aṁhūr-aṇá) *adj.* [*f.* -ā] narrow, confined उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् ṚV. vi. 47. 20; *n.* **i** distress, trouble तच्छुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नंहूरणादुरु ṚV. i. 105. 17; अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहूरणाद्धुवे AV. vi. 99. 1; दुष्वप्न्यं काम···।···प्रति मुञ्च तस्मिन्यो असमभ्यमंहूरणा चिकित्सात् AV. ix. 2. 3; य आत्मना वा गृहैर्वा॑ऽहूरणमवेयादंहसा वा एष गृहीतो य आत्मना वा गृहैर्वा॑ऽहूरणमवैति KāṭhS. 10. 9; **ii** sin अंहुरोंऽहस्वान् । अंहूरणमित्यप्यस्य भवति Nir. 6. 27.

**अंहोगृहीत** (áṁho-gṛhīta) *adj.* [*f.* -ā] overcome with sin, caught in distress तेतो॑ऽहोगृहीता असृज्यन्त MaiS. i. 10. 6; KāṭhaS. 36. 1.

**अंहोघ्न** (aṁho-ghna) *adj.* [*f.* -ī] the destroyer of sins रामनाथाख्यया देवमंहोघ्नं प्रत्यतिष्ठिपत् SkandP. i (3B). 2. 44.

**अंहोनिचित** (aṁho-nicita) *adj.* covered with sins, sinful हंहो किमंहोनिचिताः प्रलब्धा वंहीयसायासभरेण काशीम् । प्रभूतपुण्यद्रविणैकपण्यां प्राप्यापि हित्वा क्व च गन्तुमुद्यताः SkandP. iv. 5. 19.

**¹अंहोमुच्** (aṁho-múc) *adj.* delivering from distress or sin भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ṚV. x. 63. 9; अंहोमुचे प्र भरे मनीषाम् AV. xix. 42. 3; xix. 42. 4; TaiS. I. vi. 12. 3; 4; I. viii. 9. 2; II. ii. 7. 4; II. iv. 2. 1; VII. v. 22. 1; अ॑ऽहोमुचा वृषभा सुप्रतूर्ती देवानां देवतमा शविष्ठा । विष्णुवरुणा प्रतिहर्यतं न इदं नरा प्रयतमूतये हविः MaiS. iv. 14. 6; अंहोमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीमाविशत VājaS. 4. 13; इन्द्रायांहोमुचे पुरोडाशमेकादशकपालं निर्वपेच्च BaudhS'S. ii. 126. 20; ĀpaS'S. xviii. 10. 28; MānS'S. 125. 1; 186. 4; यो वेदमधीते पुरस्ताच्चोपरिष्टाच्चांहोमुग्भिः समिधोऽभ्यादध्यात् KāṭhGS. iv. 2. 3.